आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 24-01-15

हर रोज अपनी मुरलीओ में हम भाग्यशाली आत्माओं को याद और सेवा कि अलग-अलग युक्तियाँ बतलाने वाले, बेहद के ज्ञान सागर बाप ने कहा, मीठे बच्चे - याद का चार्ट रखो, जितना-जितना याद में रहने की आदत पड़ती जायेगी उतना पाप कटते जायेंगे, कर्मातित अवस्था समीप आती जायेगी.

बाबा ने हम बच्चों को सेवा करते बाबा की याद सहज रुप से रहे इसलिए हर बात समझाते, बात-बात में कहो "यह शिवबाबा कि श्रीमत् है" या "यह शिवबाबा कहते है". जब हम परमप्रिय-परमपिता-परमआत्मा शिवबाबा का नाम लेकर किसी को समझाते है तो सामने वाला हमारी बात सुनेगा जरूर क्योंकि भारत में परमात्मा शिव के तो अथाह भगत हैं और भगवान शिव का नाम तो जरूर सुना ही होगा. जब हम शिवबाबा का नाम लेकर उसे समझाते है तो हमें बाप कि याद भी रहेगी और सामने वाला भी इच्छुक हो कर हमारी बात सुनेगा.

बाबा की आज की मुरली से बाप की याद और सेवा पर कहे गये कुछ महा-वाक्यों को फिर से बाप की याद में रहकर पढ़ेंगे.

- शिवबाबा कहते हैं बच्चों की आसामी, चलन, सर्विस और खुशी को देखकर बाबा झट समझ जाते है कि इनका याद का चार्ट कैसा है. जो बच्चे म्युजियम अथवा प्रदशनी में सेवा करते है उनके पास तो सारा दिन बहुत लोगों का आना-जाना होता हैं. उन्हें घड़ी-घड़ी बाप का परिचय देना पड़ता हैं. इससे उनकी याद का चार्ट भी अच्छा रहता हैं.

- शिवबाबा कहते हैं किसी को भी विनाश के बारे में समझाते हो तो पहले कहो यह शिवबाबा कहते हैं, हम नहीं कहते. शिव भगवानुवाच है ना. यह उनकी श्रीमत् हैं. शिव के लिए ही कहा जाता हैं शिव ही सत्य हैं. किसी को भी समझाने से पहले-पहले उन्हें बाप का परिचय जरूर देना पड़ता हैं इसलिए बाबा कहते है हर चित्र में लिख दो शिव भगवानुवाच.

- शिवबाबा कहते हैं पहले तुम बताओ कि हम सब एक बेहद बाप के बच्चे हैं. वही पतित-पावन ज्ञान का सागर है. किसको भी समझाते शिवबाबा का नाम लेते रहेंगे तो इसमें बच्चों

का भी कल्याण है, शिवबाबा को ही याद करते रहेंगे. बाप ने जो तुमको समझाया है, वह तुम फिर औरों को समझाते हो तो सेवा करने वलों का याद का चार्ट भी अच्छा बनता जायेगा.

- शिवबाबा कहते हैं जो बहुतों को घड़ी-घड़ी बाप का परिचय देते हैं ऐसे सेवा धारी बच्चे बाप को भी बहुत प्रिय लगते हैं. बाप कहते है जो बच्चे रात-दिन बहुतों का कल्याण करने में लगे रहते है वह अपना ही कल्याण करते हैं, उनको ही स्कॉलरशिप भी मिलती हैं.

- शिवबाबा कहते हैं तुम बच्चे जानते हो बेहद का बाप ज्ञान का सागर है. ऊंच ते ऊंच बाप का कर्तव्य भी ऊंच है. कल्प-कल्प वही आकर ड्रामा अनुसार स्वर्ग की स्थापना करते हैं. तुम बच्चों को बेहद सुख का वर्सा देते हैं. फिर पुरानी पतित दुनिया का विनाश तो अपने आप ही ड्रामा अनुसार हो जाता हैं.

- शिवबाबा कहते हैं म्युजियम अथवा प्रदर्शनी की सेवा में ज्ञान और योग दोनों इकट्ठे चलते हैं. हर चित्र पर शिव भगवानुवाच लिखा हुआ होगा तो इससे बच्चों को घड़ी-घड़ी शिवबाबा की याद रहेगी. याद में रहने से बच्चों को सेवा का नशा रहेगा. याद से ही तुम पावन बन सारे विश्व को पावन बनाते हो. जब तुम पावन बन जाते हो तो यह सृष्टि भी परिवर्तन होकर पावन बन जाती हैं.

- शिवबाबा कहते हैं जब बच्चे बहुत दुखी हो जाते है तब बाप आकर सुख का वर्सा देते हैं. बाप ने अब तुम्हारी बुद्धि खोल दी हैं. तुम जानते हो बाप ही सबको शांतिधाम, सुखधाम ले जाते हैं. जो नम्बरवन तमोप्रधान है, वही फिर नम्बरवन सतोप्रधान बनते हैं. यह लक्ष्मी-नारायण को भी ऐसा बनाने वाला तो परमात्मा है ना. शिवबाबा है ऊंच ते ऊंच भगवान. वह बनाते भी तुम्हें ऊंच हैं.

ॐ शांति.